International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(1): 131-134

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 131-134
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-11-2021
Accepted: 12-12-2021

श्रीमती सुनिता सेंगाडा
सहायक आचार्य, (संस्कृत),
स्व. श्री भीखाभाई भील राजकीय महाविद्यालय, सागवाड़ा
जिला डूंगरपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
श्रीमती सुनिता सेंगाडा
सहायक आचार्य, (संस्कृत),
स्व. श्री भीखाभाई भील राजकीय महाविद्यालय, सागवाड़ा
जिला डूंगरपुर, राजस्थान, भारत

महाकवि भवभूतिविरचित ''मालतीमाधवम्'' में वर्णित तात्कालिक समाज और संस्कृति

श्रीमती सुनिता सेंगाडा

सारांश
महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के एक अद्भूत, महान कवि एवं नाटककार थे। "करुणा" को काव्य का मूल स्वीकारने वाले भवभूति ने अद्वितीय नाटकों का सृजन कर स्वगौरव को कालिदास के समकक्ष स्थापित किया हैं। "मालतीमाधवम्" उनमें से एक दश अंको का नाटक (प्रकरण) है। यह कवि कल्पनाप्रसूत प्रेमकथायुक्त एक पारिवारिक नाटक है। चुंकि कविकल्पना तात्कालिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्यों से अछूती नही होती। अतः इसके अध्ययन से भवभूतिकालीन समाज एवं संस्कृति का परिचय सहज ही होता हैं। प्रस्तुत शोधालेख में "मालतीमाधवम्" का गहनाध्ययन कर सुधीजनों को तात्कालिक समाज, राजव्यवस्था, पारिवारिक जीवन, विवाह प्रणाली, धर्म, पवित्र नदियॉ तथा कलाओं से परिचित करवाने का प्रयास किया गया है।

कूटशब्दः महाकवि भवभूति, मालतीमाधवम्, काल्पनिक प्रेमकथा, राजतन्त्र, पारिवारिक प्रतिष्ठा, दाम्पत्य प्रेम, स्त्री सम्मान, ब्राह्मण श्रेष्ठता, मित्रता, भ्रातृस्नेह, बौद्धमठ, धर्म, तन्त्र साधना, मदनमहोत्सव, वैवाहिकविधि, मद्यपान, कलाएँ

प्रस्तावना
महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के महान कवि एवं श्रेष्ठ नाटककार थे। संस्कृत नाट्य जगत् में स्व गौरव को कालिदास के समकक्ष स्थापित करने में भवभूति सर्वतोभावेन सफल हुये हैं। महाकवि भवभूति स्व कृतियों में रस को उद्दाम प्रवाहित करते हैं। जिसके प्रबल वेग में श्रोता, पाठक एवं दर्शक अपनी सुध बुध खोकर निरन्तर बहता रहता है।
आदि कवि वाल्मीकि ने काव्य का मूल ''करूणा'' को बताया था। भवभूति ने उसी सिद्धान्त को ब्रह्मवाक्य मानकर ''एको रसः करूण एव निमित्तभेदात्'' कहकर पूर्णरूपेण अंगीकार किया है। (उत्तररामचरितं 3/47)
संस्कृत साहित्य की यह परम्परा रही हैं कि कवि या लेखक स्व परिचय में रूचि नही रखते। वस्तुतः वे अपने अस्तित्व को अपनी कृति में निचोड कर रख देते थें। सर्वतो भावेन विनश्वर संसार में वे अपने अस्तित्व को क्षणिक मानते थें। तथापि भवभूति ने अपनी कृतियों में अपने कुल, गुरू और पाण्डित्य आदि का संक्षिप्त निदर्शन किया हैं।

''महावीरचरित्'' की प्रस्तावना में स्व परिचय देते हुए उल्लेख करते हैं कि –

अस्ति दक्षिणापथे पद्मपुर नाम नगरम्। तत्र केचित्तैत्तिरीयाः काश्यपाश्चरणगुरूवः पंक्तिपावना पंचाग्नयो धृतव्रताः सोमपीथिन उदुम्बरनामानो ब्रह्मवादिनः प्रतिवसन्ति। तदामुष्यायणस्य तत्रभवतो वाजपेययाजिना महाकवेः पंचमः सुगृहीतनाम्नो भट्टगोपालस्य पौत्रः पवित्रकीर्तेनीलकण्ठस्यात्मसम्भवः श्रीकण्ठपदलांछनः पदवाक्य प्रमाणज्ञो भवभूतानाम् जातुकर्णीपुत्रः। [1]
भवभूति विदर्भ देश के 'पद्मपुर' नामक स्थान निवासी एवं श्री भट्टगोपाल के पोते थें। इनके पिता नीलकंठ और माता जातुकर्णी थी। इनके गुरू का नाम ज्ञाननिधि था। अपने तीनों नाटकों की प्रस्तावना में अपना परिचय देकर स्व परिचय में मौन रहने की संस्कृत कवियों की परम्परा को तोडा हैं।
भवभूति रचित तीन रचनाओं में नाट्कला परिपाक और शैली प्रौठि की दृष्टि से महावीरचरित प्रथम, मालतीमाधवं द्वितीय तथा उत्तररामचरितं अन्तिम तथा सर्वश्रेष्ठ रचना स्वीकार्य हैं।
''मालती माधवम्'' दश अंको का नाटक हैं। शास्त्रीय दृष्टि से यह नाटक प्रकरण कोटि में आता हैं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में प्रकरण को परिभाषित किया हैं–

तत्र कविराजबुद्ध्या वस्तु शरीरं नायकं चैव।
स्वयमुत्पाद्य विरचयेत् तज्ज्ञेयं प्रकरणं नाम।। [2]

यह कवि कल्पनाप्रसूत प्रेमकथा युक्त एक पारिवारिक नाटक हैं। जिसमें युवावस्था के उन्मादक प्रेम का भावोत्तेजक किन्तु कही–2 असंभव घटनाओं से युक्त वर्णन हैं। माधव–मालती तथा मकरन्द–मदयन्तिका दो प्रणयकथाओं का विस्तार हैं। गद्यसन्दर्भ की अधिकता के साथ–2 भाषा में माधुर्य, ओजगुण तथा लम्बे समासों का प्रयोग हुआ हैं।

किसी भी कृति के अध्ययन से पाठक तात्कालिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य से सहज ही परिचित हो जाता हैं। इस आलेख द्वारा मालतीमाधवम् में वर्णित सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को जानने का किचिंत प्रयास किया गया हैं।

काश्मीरी पण्डित कल्हण ने सन् 1158–59 में राजतरंगिणी की रचना की। इसमें कर्कोटवंशीय ललितादित्य मुक्तापीड की कान्यकुब्जेश्वर यशोवर्मा पर विजय का उल्लेख हैं। इन्ही यशोवर्मा के भवभूति आश्रित कवि थे–

कविर्वाक्यपतिराश्रीर्भवभूत्यादिसेवितः।
जितो ययौ यशोवर्मा तद्गुणैस्तुतिवन्दिताम्।। [3]
(राजतरंगिणी 4/144)

मालती के पिता भूरिवसु पद्मावती अधीश्वर के मंत्री थें। तथा माधव के पिता देवरात विदर्भ नरेश के अमात्य थें। अतः स्पष्टतया उस समय राजशासन प्रणाली विद्यमान थी।

राजा अत्यन्त प्रभावशाली एवं समर्थ होता था। महाराज, भूरिवसु पर परम विश्वास कर उसकी पुत्री मालती का विवाह नन्दन को कर देते हैं। और भूरिवसु भी भय अथवा शिष्टाचार से मालती का वाग्दान कर देते हैं। ''अपनी कन्या के विषय में महाराज का प्रभुत्व हैं।''

प्रभवति निजकन्यकाजनस्य महाराजः इति। [4]

मंत्री भूरिवसु राजवचन का अनुसरण कर मालती–नन्दन का विवाह करते हैं। यद्यपि रूप, आयु आदि गुणों पर ध्यान न देने से वे निंदा के पात्र भी हैं। मालती भी पिता से रूष्ट हैं–

कथमुपहारीकृतास्मि राज्ञस्तातेन? राजाराधनं खलु तातस्य गुरूकम्, न पुनर्मालती। [5]

मालती–माधव के विवाह की प्रतिज्ञा पामर जन भी जानते हैं। किन्तु जब राजा के क्रीडासहचर नन्दन, राजा द्वारा मालती की मांग करते हैं तो भूरिवसु राजकोप के कारण मना नहीं करते हैं। तत्पश्चात् राजा मालती एवं नन्दन भगिनी मदयन्तिका के विषय में ठगे जाने पर क्रोधित होकर मकरन्द को बंदी बना लेते हैं। किन्तु युद्ध में माधव की वीरता देखकर ससम्मान उसे स्वीकार करते हैं।

''किमिदानीं युवयोर्भुवनाभोगभूषणाभ्यां महानुभावाभ्यां नवयौवन गुणाभिरामाभ्यां जामातृभ्यां परितोष इति।'' [6]

यद्यपि मालती नन्दन से विवाह की इच्छुक कदापि नहीं थी। किन्तु कुलकन्या के प्रतिकूल साहस का आचरण भी नहीं करती। सामाजिक एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा सर्वोपरि मानी जाती थी।

ज्वलतु गगने रात्रौ रात्रावखण्डकलः शशी
दहतु मदनः किं वा मृत्योः परेण विधास्यतः।
मम तु दयितः श्लाध्यस्तातो जनन्यमलान्वया
कुलममलिनं न त्वेवायं जनो न च जीवितम्।। [7]

बौद्धसंन्यासिनी कामन्दकी भी कहती हैं कि–किमत्र भगवत्या शक्यम्? प्रभवति प्रायः कुमारीणां जनयिता दैवं च। [8] पिता और भाग्य ही प्रायः कुमारी जनों का परिणयादि कार्य सम्पादन में समर्थ हैं।

तृतीय अंक में मालती माता के साथ शिवमन्दिर जाती हैं। मदनोद्यान में भी मालती परिजनों से परिवृत रहती हैं।

दाम्पत्य प्रणय का जो अलौकिक चित्रण भवभूति ने किया हैं। वह संस्कृत वाडमय में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका दाम्पत्य प्रेम वासनाशून्य हैं। भवभूति की दृष्टि में स्त्री भोग्यवस्तु नही, वह गृहलक्ष्मी हैं। वैवाहिक जीवन के प्रेम को आदर्श माना हैं। परस्पर अनुराग ही विवाहकर्म में श्रेष्ठतम आधार हैं। अङ्गिराऋषि कहते हैं कि–

गीतश्चायमर्थोऽङ्गिरसा यस्यां
मनश्चक्षुषोनिर्बन्धस्तस्यामृद्धिरिति । [9]

कामन्दकी स्वयं पुरूरवा–उर्वशी तथा दुष्यन्त–शकुन्तला के प्रेम विवाह का उल्लेख करती हैं। कामन्दकी माधव की एक पत्नीव्रता का उल्लेख करती हैं कि माधव अन्य स्त्री में आसक्ति रूप क्लेश से शून्य होने के कारण मालती की कृपा का पात्र हैं।

तदेवं प्रकृत्या सुकुमारः कुमारः
कदाचिदप्यन्यत्रापरिक्लिष्टपूर्वतपस्वी। [10]

भवभूति के अनुसार स्त्रियों के लिए पति तथा पुरूषों के लिए धर्मपत्नी ही प्रिय मित्र, बन्धु, काम, सम्पत्ति और जीवन हैं–

प्रेयो मित्रं, बन्धुता वा समग्रा सर्वे कामाः शेवधिर्जीवितं वा।
स्त्रीणां भर्ता, धर्मदाराश्च पुंसामित्यन्योन्यं
वत्सयोर्ज्ञातमस्तु।। [11]

भवभूति ने अपनी कृतियो में गुरू एवं स्त्रीजनों के प्रति विशेष सम्मान प्रकट किया हैं। नन्दन से विवाह की अनीच्छुक मालती माधव के प्रति अपना प्रेम गुरूजनों के समक्ष प्रकट नहीं करती। भगवती कामन्दकी के उपस्थित होने पर, माधव के चित्र को आच्छादित कर लेती हैं। गुरू के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए भवभूति कहते हैं कि श्रेष्ठ गुरू का शिष्य भी श्रेष्ठ होता हैं–

गुणैः सतां न मम को गुण प्रख्यापितोभवेत
यथार्थनामा भगवान् यस्य ज्ञाननिधिर्गुरूः [12]

स्त्री हिंसा को पापकर्म माना जाता था। माधव, मालती–वध को तत्पर अघोरघण्ट कापालिक का वध कर देता हैं। किन्तु उसकी शिष्या कपालकुण्डला एक स्त्री हैं अतः उसकी अवज्ञा कर वध नही करता।

कपालकुण्डला माधवहतक। अहंत्वया तस्मिन्नवसरे निदेयं निघ्नत्यपि स्त्रीत्यवज्ञाता। [13]

समाज में ब्राह्मण कर्म की श्रेष्ठता प्रकट हुई हैं। ये वेदज्ञाता ब्राह्मण, श्रोत्रिय ब्राह्मण धर्माद्यनुष्ठान के तत्व का निर्णय करने एवं ब्रह्मतत्व का साक्षात्कार हेतु अधिक से अधिक शास्त्रों का अभ्यास करते थे–

ते श्रोत्रियास्तत्वविनिश्चयाय भूरिश्रुतं शाश्वतमाद्रियन्ते।
इष्टाय पूर्ताय च कर्मणेऽर्थान् दारानपत्याय तपोऽर्थमायुः।।[14]

विद्याग्रहण हेतु शिष्य एक स्थान से दूसरे स्थान पर आते जाते रहते थें। मन्त्री देवरात ने अपने पुत्र माधव को न्यायविधा के श्रवण हेतु कुण्डिनपुर से पद्मावतीपुर में भेजा था। विद्वानों को राजाश्रय

प्राप्त होता था। विद्वानों में परस्पर ईर्ष्याभाव भी दृष्टिगत होता हैं। अन्तः साक्ष्य से ज्ञात होता हैं कि तत्कालीन विद्वत्समाज ने भवभूति को आदर नही दिया था। ईर्ष्याभाव को लक्ष्य कर कवि कहते हैं–

ये नाम कुचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां
जानन्ति ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम तु कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्य निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।। [15]

मित्रता का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण माधव–मकरन्द तथा मालती–लवङ्गिका हैं। माधव तथा मकरन्द एक दूसरे के प्रेम व्यवहार में पूर्ण सहयोगी बनते हैं। मकरन्द मित्र के कार्यसिद्धि हेतु मालती का छद्मवेष धारण कर नन्दन से छल पूर्वक विवाह कर उसके गृह में प्रवेश करने का साहस करता हैं। तथा नन्दन को तिरस्कृत करता हैं। जब राजा मकरन्द को बंदी बना लेता हैं तो माधव युद्ध हेतु तत्पर हो जाता हैं। माधव मित्र की वीरता का सुन्दर वर्णन करता हैं–

दोर्निष्पेविशीर्णसच्चयदलत्ककांलमुन्मथ्नतः
प्राग्वीराननुपात्य तत्प्रहरणान्याच्छिद्य विक्रामतः।
उद्वेल्लद्धनपुण्डखण्डनिकराकीर्णस्य संख्योदधे
र्द्वेधास्तम्भितपत्तिपङ्किगविकटः पन्थाः पुरस्तादभूत्।। [16]

मकरन्द भी मालती विरह से मूर्च्छित माधव को देखकर अनेक प्रकार से विलाप करता हैं। तथा प्राणत्यागने हेतु सन्नद्ध हो जाता हैं। जो नवम् अंक में श्लोक सं. 19 से 23 तक दृष्टिगत हैं। (नवमोंक)

लवङ्गिका यद्यपि मालती की धाय–पुत्री हैं। किन्तु मालती उसे प्राणप्रिया सखी का सम्मान देती हैं। मालती–माधव के प्रेम को परिपुष्ट करने में लवङ्गिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। राजमार्ग पर माधव के प्रथम दर्शन से लेकर प्रेमविवाह की स्वीकृति तक मालती की पूर्ण सहयोगी रही हैं। मालती भी लवङ्गिका को अभिन्न अंग मानती हैं। स्व मनोविकार को वह सर्वप्रथम लवङ्गिका के ही सामने प्रकट करती हैं। अभिष्ट माधव को प्राप्त कर भी सखी विरह में मालती अश्रु बहाती हैं।

सखि! कियच्चिरं लवङ्गिकाया
असन्निधानदुःखमनुभविष्यामि? प्रवृत्तिलाभोऽपि तस्या
दुर्लभः। [17]

मित्रता हेतु कामन्दकी अपने प्राणों एवं तपस्याओं से मित्र भूरिवसु का अभीष्ट कार्य सम्पन्न करना चाहती हैं–

प्राणैस्तपोभिरथवाऽमिमतं मदीयैः
कृत्यं घटेत सुहृदो यदि तत्कृतं स्यात्। [18]

भ्रातृ स्नेह का भी सुन्दर उदाहरण प्राप्त है। मालती–नन्दन विवाह के विषय को सुनकर नन्दन बहन मदयन्तिका अत्यन्नत प्रसन्न होती हैं। जब मालती वेशधारी मकरन्द नन्दन का तिरस्कार करता हैं तो नन्दन भी अपशब्द कहता हैं।

लवङ्गिका एवं मदयन्तिका में विवाद होता हैं। मदयन्तिका अनेक अवसरों के उदाहरण एवं लोकापवाद की बात कहते हुए भ्रातृ स्नेह के वशीभूत नन्दन का पक्ष लेती हैं।

श्री भवभूति भगवान शिव के परम भक्त हैं। मालतीमाधवम् के मंगलाचरण में शिव के अनुपम अद्वितीय रूप का वर्णन हैं–

चूडापीडकपालसंकुलगलम्मन्दाकिनीवारयो
विद्युत्प्रायललाटलोचनशिखिरज्वालाविमिश्रत्विषः।
पान्तु त्वामकठोरकेतकशिखासन्दिग्धमुग्धेन्दवो
भूतेशस्य भुजंगवल्लिवलयस्रड्नद्धजूटा जटाः।। [19]

पंचम अंक में योगिनी कपालकुण्डला भी शिवस्तुति करती हैं।

षडधिकदशनाडीचक्रमध्यस्थितात्मा
हृदि विनिहितरूप सिद्धिदस्तद्विदां यः।
अविचलितमनोभिः साधकैर्मृग्यमाणः
स जयति परिणद्धः शक्तिभिः शक्तिनाथः।। [20]

तृतीयोंक में मालती माता के साथ शिवमन्दिर जाती हैं। साथ ही कपालकुण्डला और अद्योरघण्ट चामुण्डा देवी की स्तुति करते हैं। जो अपने ताण्डव नृत्य से शिव को प्रसन्न करती हैं। प्रकृति पूजा स्वरूप भगवान सूर्य को भुवनरूपी द्विप का दीप मानकर उपासना की गई हैं–

कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते।
धुर्यां लक्ष्मीमिह मयि भृशं धेहि देव! प्रसीद
यद्यत्पापं प्रतिजहि जगन्नाथ! नम्रस्य तन्मे
भद्रं भद्रं वितर भगवन्भूयसेमंड्गलाय [21]

सभी प्राणियों के प्राणभूत वायु भी देव रूप में पूजित हैं। विरही माधव वायुदेव से प्रार्थना करता हैं–

विकसत्कदम्बनिकुरम्बपांसुना सह जीवितं घटय में प्रिया यतः।
अथवा तदंगपरि परिवासशीतलं मयि किच्चिदर्पय भवांस्तु में गतिः।। [22]

संध्याकाल में शंख आदि की ध्वनि तथा स्वास्तिक चिहन का उल्लेख द्वितीयोंक में मिलता हैं। समाज में तीर्थयात्रा पर जाना भी अपेक्षित माना जाता था। भवभूति का नाटक भगवान् महाकाल के यात्राप्रसंग में ही सामाजिको के समक्ष प्रदर्शित किए गए थें। वरदा, सिंधु, पारा, लवणा, मधुमती, गोदावरी, पाटलावता इत्यादि पवित्र नदियों का उल्लेख भी नाटक के (नवमोंक) में प्राप्त होता हैं।

नदी के समीप श्मशान का वर्णन भी मिलता हैं। जहां दाहसंस्कार हेतु चिताओं, भूत–प्रेत–पिशाचों का वर्णन भी हैं–

एतत्पूतनचक्रमक्रमकृतसाग्रार्धमुक्तैर्वृका–
नुत्पुष्णत्परितो नृमांसविधसैरादर्दरं क्रन्दतः।
खर्जूरद्रुमदहनजंघमसितत्वंनद्ध विष्वक्तत–
स्नायुग्रन्थिद्यानास्थिपंजरजरत्कंकालमालोक्यते।। [23]

श्मशान के निकट ही कराला नाम की भगवती का मंदिर हैं। जहां योगिनी कपालुण्डला एवं अधोरघण्ट विशेष साधना (तन्त्र साधना) करते हैं। ये देवी को पूजा सामग्री रूप में मालती का आहार समर्पित करना चाहते हैं। यह नरबलि का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। वध्य को लाल (रक्त) मालाए और रक्त वस्त्र रूपी वध्य चिन्ह भी पहनाया जाता था। मालती विरह से मूर्च्छित माधव की मृत्यु की संभावना करते हुए मकरन्द पूर्वजों को तर्पणजल देने का भी उल्लेख करता हैं–

त्वं पुण्डरीकमुख बन्धुतया निरस्त
मेको निवापसलिलं पिबसीत्ययुक्तम्।। [24]

समाज में चतुर्राश्रम की भी व्यवस्था थी। बौद्ध धर्म विद्यमान था। कामन्दकी एक बौद्धसंन्यासिनी थी। एवं मन्दारिका बौद्धमठ की परिचारिका थी जो कि माधव के भृत्य कलहंस से प्रेम करती थी।

सम्पन्न गृहस्थी जन अपनी सन्तानों की देखरेख हेतु धायं रखा करते थे। लवङ्गिका मालती की धांय पुत्री थी। पुत्रियों की सुरक्षा

हेतु नपुंसक पुरूष परिजन भी होते थे। मालती मदनोधान में नपुसंक प्रचुर पुरूष परिजनों से घिरी रहती हैं।

ततो मिलितवेत्रपाणिवर्षवरप्रायपुरूषपरिवार गजवधूमारूह्य
नगरगामिनं मार्गमिन्दुवदनालकृतवती। [25]

मदनमहोत्सव का आयोजन भी किया जाता था। माधव को मालती के प्रति आकर्षित करने हेतु अवलोकिता उसे मदनोद्यान में भेजती हैं।

विवाहावसर पर वधू हेतु विभिन्न श्रृंगार सामग्री, अलंकार मोतियों की मालाएं, चन्दन, फूल, रेशमी वस्त्र, शिरोभूषण आदि का वर्णन भी षष्ठ अंक में प्राप्त होता हैं। विवाह पूर्व वधू मालती कल्याण प्राप्ति हेतु देवता की पूजा अर्चना करती है। नन्दन–विवाह के पश्चात् नववधू के गृहप्रवेश हेतु कौमुदीमहोत्सव भी आयोजित होता हैं। भावी घटनाओं हेतु शुभ–अशुभ संकेतो की भी मान्यता थी। कामन्दकी अपनी बॉयी आंख फडकने को शुभ संकेत बताती हैं।

विवृण्वतेव कल्याणमान्तरज्ञेन चक्षुषा
स्फुरता वामकेनापि दाक्षिण्यमवलम्ब्यते [26]

राहु आदि ग्रहों का उल्लेख भी नवम् अंक में मिलता हैं। अभीष्ट फल मालती लाभ हेतु माधव श्मशान में नर मांस विक्रय करता हैं। तथा कटपूतनादि को मांस ग्रहण हेतु पुकारता हैं।

अशस्त्रपूतमव्याजं पुरूषाड्गोपकल्पितम्।
विक्रीयते महामांसं गृहयतां गृहयतामिति। [27]

मद्यपान भी प्रचलित था। श्मशान में विचरण करने वाली पिशाच ललनाएं पतियों के साथ नरकपाल रूपी पानपात्रों में मज्जा रूप मदिरा पान करती हैं।

एताः शोणितपंककुंकुपानुषः सम्भूय कान्तैः पिब
न्त्यस्थिस्नेहसुरा कपालचषकैः प्रीताः पिशाचांगनाः। [28]

प्रकरण में चित्रकला का भी सुन्दर उदाहरण दिखता हैं। मालती तथा माधव अपने विरहजन्य दुख को हटाने हेतु प्रिय का चित्र बनाते हैं। शिल्पी, स्वर्णकार, लेखक आदि का उल्लेख होने से ज्ञात होता हैं कि ये कलाएं विद्यमान थी। छद्मवेश धारण की कला भी स्पष्ट हैं। कामन्दकी, नन्दन से विवाह करने हेतु मकरन्द को स्त्रीवेश में तैयार होने को कहती हैं। बुद्धरक्षिता कामसूत्र की ज्ञाता हैं। वात्स्यायन का मत प्रकट करते हुए कहती हैं कि–

कुसुमसधर्माणो हि योषितः सुकुमारोपक्रमाः।
तास्त्वनधिगतविश्वासैः प्रसभमुपक्रम्यमाणाः
सम्प्रयोगविद्वेषिण्यो भवन्ति। [29]

पत्र लेखन विद्या का उदाहरण भी प्राप्त होता हैं। दशम् अंक में नन्दन से अभिनन्दित पद्मावतीश्वर राजा ने भूरिवसु के समक्ष पत्र लिखकर चिरंजीव माधव की प्रशंसा की।

श्लाघ्यानां गुणिनां धुरि स्थितवति श्रेष्ठान्ववाये त्वयि
प्रत्यस्तव्यसने महीयसि परं प्रीतोऽस्मि जामातरि।
तेनेयं मदयन्तिकाऽपि भवतः प्रीत्यै तव प्रेयसे
मित्राय प्रथमानुरागघटिता ऽप्यस्माभिरूत्सृज्यते।। [30]

इस प्रकार महाकवि भवभूति ने ''मालती माधवम्'' नाटक की कथावस्तु एवं पात्रों द्वारा तात्कालिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का अनुपम चित्रण किया हैं। नाटक के श्रवण–दर्शन से दर्शक पात्रों के साथ सहज ही जुडता चला जाता हैं। यही भवभूति की काव्य श्रेष्ठता हैं।

सन्दर्भ

1. महावीरचरितं, भवभूति
2. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि
3. राजतंरगिणी, कल्हण, 4/144
4. मालती माधवं, भवभूति, चतुर्थ अंक
5. वही, द्वितीय अंक
6. वही, अष्टम अंक
7. वही, द्वितीय अंक, श्लोक संख्या 2
8. वही, द्वितीय अंक
9. वही, द्वितीय अंक
10. वही, तुतीय अंक
11. वही, षष्ठम् अंक, श्लोक संख्या 18
12. वही, प्रथम अंक, श्लोक संख्या 09
13. वही, षष्ठम् अंक
14. वही, प्रथम अंक, श्लोक संख्या 07
15. वही, प्रथम अंक, श्लोक संख्या 18
16. वही, अष्टम् अंक, श्लोक संख्या 09
17. वही, अष्टम् अंक
18. वही, प्रथम अंक, श्लोक संख्या 12
19. वही, प्रथम अंक, श्लोक संख्या 01
20. वही, पंचम् अंक, श्लोक संख्या 01
21. वही, प्रथम अंक, श्लोक संख्या 05
22. वही, पंचम् अंक, श्लोक संख्या 44
23. वही, पंचम् अंक, श्लोक संख्या 14
24. वही, नवम् अंक, श्लोक संख्या 40
25. वही, प्रथम अंक
26. वही, प्रथम अंक, श्लोक संख्या 11
27. वही, पंचम् अंक, श्लोक संख्या 18
28. वही, पंचम् अंक, श्लोक संख्या 12
29. वही, सप्तम् अंक
30. वही, दशम् अंक, श्लोक संख्या 23